॥ श्री राम जी की आरती॥

॥ श्री राम जी की आरती॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं।
नव कंजलोचन, कंज – मुख, कर – कंज, पद कंजारुणं।।
कंन्दर्प अगणित अमित छबि नवनील
त छबि नवनील – नीरद सुन्दरंरं।
पटपीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतवरं।।
जनक सुतवरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव
नेश दानव – दैत्यवंश – निकन्दंन्दंन।
रधुनन्द आनंदकंद कौशलचन्द दशरथ ्
द दशरथ – नन्दनं।।नं।।
सिरा मुकुट कुंडल तिलक चारू उदारु अंग विभूषांभूषां।
आजानुभुज शर – चाप – धर सग्राम – जित त – खरदूषणमं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर तुलसीदास शंकर – शेष – मुनि – मन रंजनं।
मम हृदय – कंच निवास कुरु कामादि खलदल
खलदल – गंजनं।।
मनु जाहिंराचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो
ाँवरो।
करुना निधान सुजान सिलु सनेहु जानत रावरो।।
लु सनेहु जानत रावरो।।
एही भाँति गौरि असीस सुनि सिया सहित हियँ हरषीं अलीँ
हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनिपुनि मुदित मन मन्दिरचली।।
रचली।।
दोहा
जानि गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि
।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।ाम अंग फरकन लगे।।